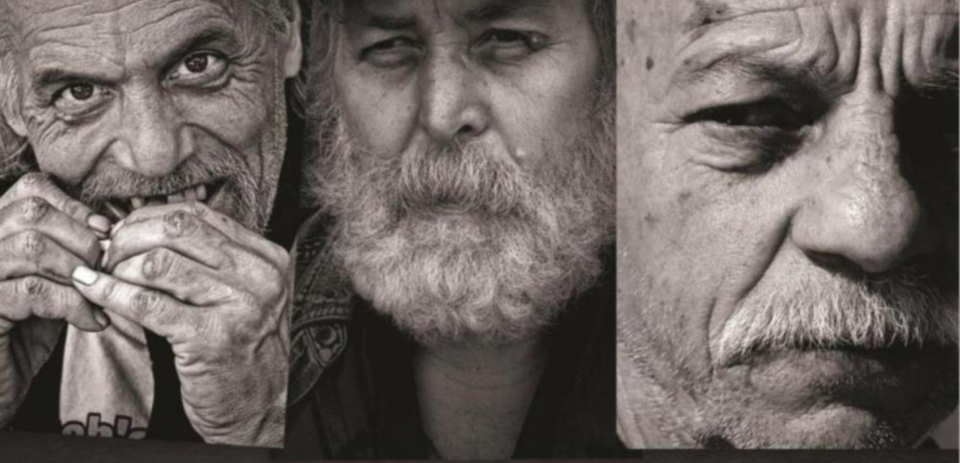

# आखिरी पड़ाव

सुलामान मिंज

आखरी पड़ाव

Publishing-in-support-of,

# FSP Media Publications

RZ 94, Sector - 6, Dwarka, New Delhi - 110075
Shubham Vihar, Mangla, Bilaspur, Chhattisgarh - 495001

**Website:** *www.fspmedia.in*

---

**© Copyright, Author**

All rights reserved. No part of this book may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted, in any form by any means, electronic, mechanical, magnetic, optical, chemical, manual, photocopying, recording or otherwise, without the prior written consent of its writer.

**ISBN:** 978-93-6026-195-5

**Price:** ₹ 365.00

The opinions/ contents expressed in this book are solely of the author and do not represent the opinions/ standings/ thoughts of Publisher.

Printed in India

# आखरी पड़ाव

सुलेमान मिंज

# लेखक के बारे में

सुलेमान मिंज, झारखंड में 4 अगस्त 1982 को पैदा हुए, लोहरदगा जिले में अपने प्रारंभिक पढ़ाई पूरी की। वह बहुत अच्छा लिखते है और उन्हें स्कूली फिक्शन पढ़ने में दिलचस्पी थी। उन्होंने कहा कि वह लेखन से अपने विचारों को व्यक्त करते है और उन्हें इस से प्यार है। उन्होंने कहा कि भगवान ने दो खूबसूरत बच्चों से नवाजा है और वह एक प्लंबर के रुप में कार्यरत हैं।

# पुस्तक के बारे में

यह एक उपन्यास की कहानी है जो एक वृद्धाश्रम के जीवन सुनाती है। लेखक के वास्तविक जीवन टिप्पणियों से प्रेरित होकर, इस कहानी के युवाओं के लिए एक सबक देता है। कहानी बहुत ज्यादा हास्य सामान हो रही है, जो निश्चित रूप से आपके चेहरे पर एक मुस्कान छोड़ देंगे।

# आखरी पड़ाव

**एक** वृद्ध व्यक्ति हाइवे पर डन्डा टेकता हुआ चले जा रहा था। उम्र 70 पार कर चुका था। सफेद धोती और कत्था कलर का कुर्ता पहन रखा था। वो भी फटे पुराने। रब्बड़ की चप्पल उसके पैरों की शोभा बढ़ा रही थी। चेहरे पर झुरियों का घना जाल था। हाथ पॉव कॉप रहे थे। मोच दाढ़ी और बाल पूरे पके, बड़े–2 थे। कुल मिला कर उसकी हालत पागलों जैसी थी।हाइवे के दोनों ओर बिल्ड़िगें खड़ी थी। कुछ छोटी तो गगन को छू रही थी।

इस समय पूरे हाइवे पर काफी भीड. थी। पूरा महौल 'शोर–शराबे से गूँज रहा था। वृद्ध व्यक्ति बड़ी मुश्किल से फुटपात पर बैठा। तत्पश्चात उसके ऑखों से ऑसू छलक आये। उसने डन्डा नीचे छोड़ा ,ऑसू पोंछने लगा। शायद वह किसी बात को दिल से लगाये बैठा था।

''बाबा! मैं आपको कब से ढूँढ रहा हूँ। और आप यहॉ?''

एक नौजवान उसके सामने आ खड़ा हुआ। कहा। लम्बा–चौड़ा गोरा सा था। उम्र 30–35 के आस पास थी। ब्लू जीन्स और आसमानी कलर का कमीज पहन रखा था।

वृद्ध व्यक्ति ने चौंकते ही उसकी ओर देखा, देखता ही रह गया। वह नौजवान उसके लिए बिल्कुल ही अजनबी था।

''चलिये बाबा!'' उसन आगे कहा।

''कहॉ ?'' उसने तपाक से सवाल किया।

''अपने घर।''

''कौन सा घर ?''

''अरे चलिये न बाबा।'' उस नौजवान ने आग्रह किया। फिर उसका हाथ पकड़ लिया।

वृद्ध व्यक्ति न चाहते हुए पास पड़ी डन्डा उठाया। फिर डन्डा टेकता हुआ उठ खड़ा हुआ। उसके साथ हो लिया। वह नौजवान उसे लिये एक ओर खड़ी मर्सीडीज कार की ओर बढ़

रहा था। वृद्ध व्यक्ति उसे घूरता हुआ खामोश मुद्रा में उसके पीछे–2 डन्डा टेकता हुआ चले जा रहा था।

''बाबा! बैठिये।'' उस नौजवान ने मर्सीडीज कार के सम्मुख पहुॅचा, अगला दरवाजा खोलकर कहा।

वृद्ध व्यक्ति ने दायॉ हाथ में पकडा डन्डा बायें में पकडा, फिर दायॉ हाथ से मर्सीडीज कार के सीट पर हाथ रखता हुआ कार में सवार हो गया।

नौजवान ने दरवाजा बन्द किया। फिर डाईविंग सीट पर जा बैठा। अब मर्सीडीज कार चल पड़ी थी।

''बाबा! आपका क्या नाम है?'' उस नौजवान ने सवाल किया।

''शंकर ओझा।'' उसने अपना ध्यान सामने से

हटया, उसकी ओर देखकर कहा।

''आप सड़कों पर क्यों भटक रहे थे?''

''सड़कों पर नहीं भटकूॅ तो कहॉ भटकूॅ ?''शंकर ओझा के आखों से ऑसू छलक आये। उसने आगे कहा।

''मेरे बेटे ने मुझे घर से निकाल दिया है।

''बाबा! आप रोइये नहीं। जो होना था सो हो गया। अब

आपके मस्ती करने के दिन आ गया समझीये।''

''अरे काहे का मस्ती!'' शंकर ओझा ने ऑखों से बहते ऑसूओं को रोका, पोंछते ही व्यंग किया। ''और इस बुढ़ापे में क्या मस्ती करूॅगा ? मस्ती तो मैं अपने जवानी के दिनों में किया करता था।''

वह नौजवान बिल्कुल खमोश हो गया। अपना ध्यान सामने की ओर लगाया।

मर्सीडीज कार दौड़ती चली जा रही थी। मर्सीडीज कार एक घन्टे बाद पॉच तल्ले की एक बिशाल बिल्डिंग कें ऑगन में जाकर रूकी। ऑगन बहुत बिशाल था। उसके चारों ओर सुन्दर–2 फुलवारियॉ थी। उससे थोड़ा हटकर पेड़ों का बगान था।

'शंकर ओझा मर्सीडीज कार से उतरा, आस पास नजर दौड़या। विशाल ऑगन में पॉच टर्क की गाड़ियॉ खड़ी थी। जिसमें से दो पर बहुत सारे वृद्ध लोग समानों से भरी पेटियॉ चढ़ा रहे थे। कुछ वृद्ध लोग जहॉ तहॉ पड़ी खटिया के उपर

बैठे थे। जिसमें से कुछ की नजर उनकी ओर थी। अब शशकर ओझा ने बिल्ड़िग के उपर नजर दौड़ाया। बिल्डिग के दूसरे तल्ले पर बड़े–2 अक्षरों में लिख हुआ था। 'आखरी पड़ाव'। पूरा बिल्ड़िग ब्राउन कलर से पेन्ट किया हुआ था। बोड़रों को गुलाबी कलर से। ''चलिये बाबा!'' उस नौजवान ने स्वर में मिठास घोलते हुए कहा। फिर बिल्ड़िग के बड़े से दरवाजे की ओर की ओर बढ़ने लगा।

आस पास मौजूद वृद्ध लोग उसे अभिवादन कर रहे थे।

नौजवान उनका अभिवादन स्वीकार करता हुआ बढ़े चला जा रहा था। वह नौजवान कुछ मिनटों बाद बिल्ड़िग के अन्दर था। गली में चल रहा था। जिसकी चौड़ाई बारह फीट के आस पास थी। पूरा गली मरकरी की लाइटों से नहाया हुआ था। वह नौजवान कुछ दूर चलने के बाद एक लिप्ट के पास रूका, उसका दरवाजा खोला।

''आइए बाबा!'' उसने कहा, फिर लिफ्ट में सवार हो गया।

कछ ही पलों बाद लिफ्ट चल पड़ी थी।

करीब दो मिनट बाद लिफ्ट चौथे तल्ले में जाकर रूकी। वह नौजवान 'शंकर ओझा के साथ लिफ्ट से बाहर निकला। सामने लम्बी चौड़ी गली थी। जिसमें चलते–फिरते कुछ वृद्ध पु0 और वृद्ध महिलाएँ नजर आ रहे थे।

''मोहन अंकल!'' उस नौजवान ने एक वृद्ध को देख, उसकी ओर बढ़ते हुए चिल्लाया।

वह वृद्ध रुका, उस नौजवान को देखकर उसकी ओर बढ़ने लगा। लम्बा–चौड़ा काला सा था। चेहरा सक्त, ऑखें धसी हुई थी। सिर के बीचों बीच से बालों का एक गुच्छा निकली थी। जो उसके पीठ से सटा हुआ था। फर्स को छूती लूॅगी और चीरा–2 सा कमीज पहन रखा था। चेहरा साफ, माथे पर बड़ा सा कुमकुम का टीका था। उम्र 65 पार कर चुका था।

''प्रणाम सर!'' उसने पास पहुॅचते ही कहा। सावधान खड़ा होकर दोनों हाथ पीछे कर लिया।

''प्रणाम! आप इसे किसी कमरे में लेकर शिप्ट कर दीजिए। साथ में इसका हुलिया भी।''

''ठीक है सर। चलिये।'' उसने हाथों का जकड़ खोलकर एक ओर इशारा किया। फिर चल पड़ा।

'शंकर ओझा उस नौजवान को घूरता हुआ मोहन पाण्डेय के साथ हो लिया।

मोहन पाण्डेय उसे लिये कुछ देर बाद एक हॉलनुमा कमरे में दाखिल हुआ। जिसका नम्बर था–502। कमरे में बहुत सारे वृद्ध लोग मौजूद थे। उनमें से आधे से अधिक लोगों ने ब्लू कलर की पैन्ट और शर्ट पहन रखी थी। कुछ लेटे पड़े थे, तो कुछ झुण्ड़ बनाकर ताश खेल रहे थे। जिसमें से कुछ लोगों का ध्यान उनकी ओर था।

''ये रहा तुम्हारा कमरा।'' मोहन पाण्डेय ने एक बेड़ के पास पहुॅंचते ही उससे कहा।

शंकर ओझा ने बेड़ पर नजर दौड़ाया। सिंगल बेड़ था। उसपर सुन्दर सा बेड़सीट बिछा हुआ था।

''हैलो दोस्त!'' एक वृद्ध व्यक्ति ने 'शंकर ओझा के पास आकर हाथ बढ़ते ही बोला। ''तुम्हारा इस आखरी पड़ाव में स्वागत है।''

शंकर ओझा ने उसकी ओर देखा, कहा कुछ नहीं।

''मनोरमा!'' मोहन पाण्डेय ने एक ओर झुण्ड के पास बैठी एक लड़की को आवाज दिया।

मनोरमा उठकर उसकी ओर बढ़ने लगी। बोली।

''क्या है?''

''जाओ तुम इसके लिये खाना ला देना। बेचारा का चेहरा उतरा है। पता नहीं, कितने दिनों से नहीं खाया है।''

मनोरमा चल पड़ी।

'शंकर ओझा बेड़ पर बैठा। उसे बेड़ गद्दीदार लगा। फिर वह बेड़ पर उचकने लगा।

''अबे! बन्दरों की शंति क्यों उचक रहा है? नीचे गद्दा है। समझा।'' मोहन पाण्डेय ने उससे कहा।

उसने उसकी ओर देखा। फिर सिर झुकाये बिल्कुल गम्भीर हो गया।

''तुम्हारा क्या नाम है ?'' मोहन पाण्डेय ने सवाल किया।

''जी शंकर ओझा।''

''ओ अच्छा!'' मोहन पाण्डेय ने कुछ सोचकर मुस्कुराया। कहा। ''इसीलिये पागलों जैसी हालत बना रखी है।''

शंकर ओझा ने कुछ न कहा। उसे घूरने लगा। एक वृद्ध व्यक्ति डन्डे के सहारे चलता हुआ वहॉ पहुॅचा। उसकी हालत भी शंकर ओझा जैसी थी। अन्तर सिर्फ इतना था, कि उसके कपडे अच्छे और साफ सुथरे थे। और ऑखों पर बड़ा सा पावर का चश्मा था। उसने शंकर ओझा को ऐसे घूरा, जैसे कोई कसाई बकरे को काटने से पहले घूरता है।

''क्यों बे ठाकुर ?''मोहन पाण्डेय ने उस वृद्ध से कहा। ''नया बकरा देखकर तुम्हारे हाथों में खुजली हो रही है क्या ?''

''हॉ।'' उसने मुस्कुरा दिया।

''तो फिर क्या सोच रहा है ? इसे लेकर बाथरूम जा।''

''ऐ भाई! चल।'' ठाकुर ने अपने कॉपते हाथों से उसका हाथ पकड़ लिया। कहा।

''कहॉ ?'' शंकर ओझा ने सवाल किया।

''बाथरूम में।''

''क्यों ?''

''क्योंकि तुम्हारा हलाल होने वाला है।'' एक वृद्ध, जो वहॉ आकर खड़ा हुआ था। बोला।

शंकर ओझा भय से लम्बी–2 सॉसे लेता हुआ अपना हाथ छुड़ा लिया। बोला।

''मैं नहीं जाऊॅगा।''

आस पास मौजूद वृद्ध लोग हॅस पड़े।

''ऐ भाई!'' मोहन पाण्ड़ेय ने उसका कन्धा थपथपाया। कहा।'' डर क्यों रहा है ? ये सिर्फ तुम्हारा मोच दाढ़ी और बाल काटेगा, और कुछ नहीं।''

ये सुनकर उसे राहत महशूश हुई।

''चल भाई!'' ठाकुर ने पुनः उसका हाथ पकड़ते ही कहा।

शंकर ओझा उठ खड़ा होकर उसके साथ हो लिया।

ठाकुर उसे लिये कमरे के एक कोने में स्थित बाथरूम की ओर बढ़ रहा था।

मोहन पाण्डेय ने उसकी ओर देखा, दरवाजे की ओर बढ़ने लगा। वह कुछ मिनटों बाद लम्बी–चौड़ी गली में स्थित दुकान के ठीक सामने जा खड़ा हुआ। बोला।

''ऐ भाई!''

दुकान में मौजूद एक वृद्ध ने उसकी ओर देखा।

''दो जोड़ा धोती–कुर्ता और साथ में दो अण्डर वियर देना।'' उसने आगे कहा।

''कोई नया आया है क्या ?'' उसने दो जोड़ा धोती–कुर्ता और दो अण्डर वियर बढ़ाया। बोला।

''हॉ। एक बुढ्ढा आया है।'' उसने उत्तर दिया। फिर सभी कपड़ों को समेट कर से चलता बना। कुछ मिनटों बाद वह अपने कमरे में था। वह कमरे में नजर दौड़ाता हुआ एक जोड़ा धोती कुर्ता और एक अण्डर वियर एक खाली बेड़ पर फैंका, बाकी कपड़ा को लेकर बाथरूम की ओर बढ़ने लगा।

''क्यों ? हलाल कर लिया।'' उसने बाथरूम से निकलते ठाकुर को देखा, तो पूछा।

''हॉ।'' उसने रूकते ही सिर हिला दिया।

''अभी वो क्या कर रहा है ?''

''नहा रहा है।''

मोहन पाण्डेय बाथरूम में जा घुसा। अन्दर नजर दौड़ाया।

बाथरूम काफी बड़ा था। पूरा बाथरूम मरकरी की लाइटों से नहाया हुआ था। दोनों तरफ के दीवाल पर बड़ा–2 मिरर चिपका हुआ था। शावरों में से एक शावर खुला था। जिससे पानी फुहारों के रूप में नीचे गिर रही थी। जिसके नीचे शंकर ओझा खड़ा था।

''अबे बुढ़ाउ!'' मोहन पाण्डेय ने उसे पुकारा।

उसने चौंकते ही उसकी ओर देखा।

उसने आगे कहा। ''तुम्हारे लिए ये कपड़ा ला दिया हूॅ। नहा कर पहन लेना।''

शंकर ओझा ने कहा कुछ नहीं। शावर बन्द किया फिर अपने शरीर पर साबून रगड़ने लगा। कुछ मिनटों बाद उसने दरवाजे की ओर देखा। मोहन पाण्डेय गायब था। उसने स्नान करते ही कपड़ा चेंज किया। अपने पुराने कपड़ो को एक कोने

में लेकर रख दिया। फिर दरवाजे की ओर बढ़ते हुए अपना तीसरा पैर पकड़ा, बाथरूम से बाहर निकल गया।

''ओ देखो!'' मोहन पाण्डये ने उसे बाथरूम से निकलते देखा तो अपने साथियों से कहा। ''चिकना आ रहा है।''

उसके साथी हॅस पडे।

शंकर ओझा शर्माता हुआ उनकी ओर बढ़ रहा था। उसका चेहरा साफ, सिर के छोटे–2 बाल थे।

''चल आ भाई!'' मोहन पाण्डेय ने हाथ से इशारा कर कहा।

''शंकर ओझा डन्डा टेकता हुआ उसके सम्मुख जा खडा हुआ।

मोहन पाण्डेय ने उसके मुखमंडल पर नजर अटकाया, बोला।

''तुम्हारा घर कहॉ है ?''

''जी इसी शहर में।''

''घर में कौन–2 है ?''

''रहने को तो सभी हैं। लेकिन मैं उनके लिये बेकार हॅू।''

''अरे ओझा भाई! तू खडा क्यों है ? चल बैठ न।'' ठाकुर ने आग्रह किया।

शंकर ओझा उनके सामने खाली पडी बेड पर बैठ गया। बेड पर सरसरी नजर दौडाया। बोला।

''ये बेड किसका है ?''

''तुम्हारा।'' मोहन पाण्डेय ने तपाक से उत्तर दिया।

''पहले किसका था ?''

''एक बुढ्ढे का।''

''ओ बुढ्ढा अभी कहॉ है ?''

''कल ही मर गया।''

उत्तर सुन शंकर ओझा उठ खडा हुआ।

''अरे बैठ न। टेन्सन क्यों ले रहा है ? वैसे भी तू, आज नहीं तो कल मरने ही वाला है।''

''शंकर ओझा उसपर नजरें जमाये न चाहते हुए बेड से चिपक गया।

तभी!

कमरे मे मनोरमा दाखिल हुई। उसके हाथों में भोजन से भरी एक थाली थी। साथ में एक बोतल पानी भी।

''ये लीजिए।'' उसने शंकर ओझा के पास पहुॅचते ही उसके सामने बेड पर भोजन से भरा प्लेट और पानी की बोतल रखते ही कहा।

शंकर ओझा प्लेट सामने देख अपना तीसरा पैर बेड के एक छोर पर रखा। पैर बेड पर चढ़ाया, इत्मिनान से बेड पर बैठ गया। फिर खाने पर टूट पड़ा।

''क्यों मनोरमा ?''मोहन पाण्डेय ने कहा। ''बुढ्ढा चिकना लग रहा है न।''

''हॉ।'' उसने मुस्कुरा दिया।

''चलो ताश खेलते हैं।'' मोहन पाण्डेय ने उनदोनों की ओर से अपना ध्यान हटाया, आस–पास बैठे अपने साथियों से कहा। फिर अपने कमीज के जेब पर हाथ डाला। बाहर निकाला तो हाथ में ताश के पत्ते थे।

''ऐ मनोरमा!'' मोहन पाण्डये ने चिल्लाया। ''तू खेलेगी क्या ?''

''नहीं।''उसने इन्कार में सिर हिला दिया। वह शंकर ओझा के बगल में खडी थी।

''अरे! तू क्या खेलेगी ?'' बगल में बैठे ठाकुर ने शरारत भरे स्वर में कहा। ''तेरा बुढ्ढा जो आ गया है।''

मनोरमा ने प्रतिक्रिया स्वारूप मुस्कुरा दिया।

बाकी साथी हॅस पडे।

''क्या खेला जाए ?'' मोहन पाण्डेय ने अपने साथियों से पूछा।

''खींचपत्ति।'' एक वृद्ध ने उत्तर दिया।

मोहन पाण्डेय ने दो सत्ता और उससे छोटे पत्तों को अलग करके एक ओर रख दिया। फिर बाकी पत्तों को फैटने लगा। उसके बाद नीचे रखा। बगल वाले ने ताश काटा। मोहन पाण्डेय ने ताशें उठाया, कटे हुए ताशों पर रखा। फिर बॉटने लगा। पॉच–2, तीन–2, उसके बाद दो–2 करके।

''पेट भरा या नहीं।'' मनोरमा ने भोजन समाप्त होते ही उससे पूछा।

''हॉ–2 और खिलाओ।'' जब मोहन पाण्डेय ने उसकी बातें सुनी तो कहा। ''तेरा बुढ्ढा, पता नहीं कितने दिनों से नहीं खाया है।''

मनोरमा ने कुछ न कहा। शंकर ओझा की ओर देखा। शंकर ओझा गुस्से से कॉपते हुए मोहन पाण्डेय को घूर रहा था।

''आप गुस्सा मत होइये।'' मनोरमा ने उसके कन्धे पर हाथ रखा, कहा। ''इनकी तो मजाक करने की आदत है।''

शंकर ओझा पल भर में ही ठन्डा हो गया। प्लेट पर हाथ धोया। फिर बोतल मुॅह से लगा लिया।

''आप अराम कीजिये। मैं चलती हूॅ।'' मनोरमा ने कहा। फिर थाली उठाकर चल पड़ी।

''चलिये! पत्तियॉ नीचे रखीए। दो पत्ति खीचना है।'' ठाकुर ने मोहन पाण्डेय से कहा
मोहन पाण्डेय ने ताश के पत्तों को नीचे रख दिया।

उसने कॉपते हाथों से दो पत्ते खींचा। फिर बदले में दो पत्ते लौटा दिया।

''अबे! तूने इक्के क्यों खींचा ?'' मोहन पाण्डेय ने पत्ति देख चिल्लाया।

''क्यों ? बुरा लगा।'' उसने शरारत भरे स्वर में कहा।

''नहीं। चल खेल।''

उसने अगले ही पल लालपान का इक्का नीचे पटक दिया।

तभी!

आलार्म की आवाजें उनके कानों से आ टकराई।

''चलो बे! पत्ति समेटो।'' मोहन पाण्डेय ने अपने साथियों से कहा।

उन्होंने ताश के पत्तों को समेट कर उसकी ओर बढ़ा दिया।

मोहन पाण्डेय ताश के पत्तों को कमीज के जेब में रखता हुआ उठ खड़ा हुआ। फिर शंकर ओझा की ओर देखा।

शंकर ओझा बेड पर इत्मिनान से लेटा पड़ा था।

मोहन पाण्डेय उसके पास पहॅचते ही बोला।

''अच्छा शई! तू आराम कर। हमलोग चलते हैं।''

# आखिरी पड़ाव

सुलामान मिंज का जन्म, 04 अगस्त, 1982 में झारखण्ड में हुआ है। उन्होंने अपनी प्रारम्भिक शिक्षा लोहरदगा जिले से पूर्ण की है। उन्हें अपने बचपन के दिनों से ही कहानियाँ, उपन्यास पढ़ने–लिखने का शौक रहा है। उन्हें अपने विचारों को शब्दों के माध्यम से लोगों तक पहुँचाना अत्यन्त प्रिय है। उनके दो बच्चे हैं और वे प्लम्बर का कार्य करते हैं।

लेखक से संपर्क हेतु :
amarminj11@gmail.com

FSP
FSP MEDIA PUBLICATIONS

BOOK AVAILABLE
Flipkart
GET IT ON Google Play
amazon
amazonkindle

EBOOK AVAILABLE
ISBN 978-93-6026-195-5
9 789360 261955